Q पर्वतीय एरिया क्षेत्र में जलवायु का प्रभाव मानव के क्रिया कलापों पर वातावरण (जलवायु) के प्रभाव की विवेचना करें ?

"भू पृष्ठ की बनावट मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है। मनुष्य अपना निवास स्थान बनाने से पहले उच्चावच पर अवश्य ध्यान देता है। वह देखता है कि क्या वहां की भूमि घर बनाने तथा कृषि करने के लिए उपयुक्त होगी ? क्या वहाँ परिवहन की सुविधा होगी ? क्या वहाँ उद्योग के लिए आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त होती है ? इन विचारों का विश्लेषण करने के पश्चात मनुष्य इस निर्णय पर पहुचता है कि उसके स्थापित होने के लिए तथा जनसंख्या की बढ़ोतरी के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितियां है या नही।

पर्वतीय क्षेत्रों की मिट्टी पतली तथा कम उपजाऊ होती है। यदि वर्षा अधिक होती है तो मिट्टी का कटाव अधिक होता है। जलवायु ठंडी होती है। इस लिए खाद्यान्नों के उगने में कठिनाइयाँ होती है। यदि पर्वतीय भागों में कृषि की जाती है तो इसके लिए परिश्रम अधिक करना पड़ता है सीढ़ीनुमा खेत बनाने पड़ते हैं। इस प्रकार अधिक भूमि का प्रयोग करके भी उसे अधिक लाभ उठाना सम्भव नही होता है, जितना समतल भूमि से होता है। इस लिए वहाँ की भूमि पर अधिक जनसंख्या भी निर्भर नहीं हो सकती। वास्तव में निरन्तर ऊंचाई के अनुसार पर्वतीय भागों की जनसंख्या में कमी होती जाती है। पर्वतों की ऊंची-नीची भूमि पर परिवहन के साधनों को बनाना भी दुर्लभ होता है। 6000 मी० से अधिक ऊंचाई पर मानव को श्वांस लेने में भी कठिनाई होती है।

अतः मानव एवं वातावरण में अन्योन्याश्रय सम्बंध है। वातावरण वह घेरा है, जो मानव को चारों ओर से घेरे हुए है और उसके जीवन एवं क्रिया कलापों को प्रभावित करता है।

जर्मन वैज्ञानिक :— ने अपनी एक निबंध में मानव जीवन के वातावरण के गहरे तथा व्यापक प्रभाव का समर्थन किया है। वातावरण का अर्थ जीवन के पारिस्थितिक कारकों का कुल योग बताया गया है।

टांसले :— ने "मानव जीवन को प्रभावित करने वाली सभी दशाओं को जिसमें जीव निवास करती है, वातावरण कहा जाता है।"

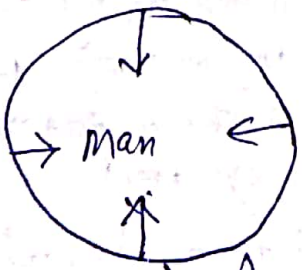

जलवायु :— एक देश की जलवायु पर पर्वतों का भी प्रभाव पड़ता है। ऊंचाई पर जाते हुए तापमान निरन्तर घटता जाता है। लगभग 160 मीटर की ऊंचाई पर 1°C.g. ताप कम हो जाता है उष्ण प्रदेशों में जहाँ पर्वत स्थित है वहाँ पर्वतों पर स्वास्थ्यवर्धक जलवायु मिलती है। पर्वत शिखरों पर पर्यटक केन्द्र बन जाते हैं। भारत में शिमला, मंसूरी, दार्जिलिंग, उटकमण्ड आदि।

जहाँ जनसंख्या अच्छी पाई जाती है। पर्वतीय प्रदेश आर्द्रतापूर्ण पवनों को रोकने में समर्थ होते हैं, इस लिए वर्षा भी मैदानों की अपेक्षा अधिक होती है। इसके विपक्ष में पर्वत श्रेणियाँ एक देश को ठंडी पवनों से सुरक्षा प्रदान करती है। भारत के उत्तर में हिमालय स्थित होने के कारण मध्य एशिया की ठंडी पवनें भारत में प्रवेश नहीं कर पाती जबकि यही ठंडी पवनें चीन के आधे से अधिक भाग को प्रभावित करती है। इसी प्रकार उत्तरी अमेरीका में कनाडा की ठण्डी पवनें संयुक्त राज्य के दक्षिण तक पहुंच जाती है और तापमान को पर्याप्त गिरा देती है।

वनस्पति :→ पर्वतों पर ऊँचाई के अनुसार वनस्पति के प्रकार में काफी भिन्नता पाई जाती है। अतः भूमि उपयोग भी प्रभावित होती है। पर्वतों पर एक विशिष्ट ऊँचाई से ऊपर वृक्ष नहीं उगते, केवल घास के मैदान पाये जाते हैं। यहाँ पशुपालन की अनुकूल परिस्थितियाँ पायी जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों में वन के अधिकता के कारण लकड़ी काटने का धन्धा अधिक प्रचलित है। किन्तु ढाल भूमि पर लकड़ी काटना, छाटना तथा लट्ठों को लकड़ी के चीरने वाले कारखानों तक पहुंचाना बहुत कठिन कार्य होता है। इन कार्यों के लिए मानव ने आसान तरीके खोज निकाले हैं। नार्वे और स्वीडन में लकड़ी के लट्ठों को बर्फ पर फिसलाकर जमी हुई नदियों तक पहुँचाया जाता है। हिमालय क्षेत्र के वृक्षों को काटकर तनों को नदियों में बहा दिया जाता है। U.S.A. में पक्की सड़कें बनाई गयी है।

कृषि :→ पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि कार्य केवल सीमित मात्रा में सम्भव है। यहाँ कृषकों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे—

(1) समतल भूमि की कमी
(2) मिट्टी का अधिक क्षरण
(3) मिट्टी का कम गहरा होना
(4) जलवायु की बाधाएँ।

कृषि करने के लिए समतल भूमि की आवश्यकता होती है। समतल भूमि पर ही सिंचाई सहीगत से की जा सकती है। कृषि यंत्रों का उपयोग भी सम्भव है। पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि मानव के कठिन परिश्रम पर ही निर्भर है। यहाँ जोतने से लेकर फसल काटने तक समस्त कार्य हाथों से ही करने होते हैं। कहीं-2 तो हल बैल की जगह मनुष्य को ही चलाना होता है। यूरोप में हलों को Hoe (हो) कहते हैं। पर्वतीय ढालों पर सीढ़ियाँ काट कर खेत बनाया जाता है ऐसे खेतों में वर्षा का जल एवं सिंचाई कार्य कुछ समय तक किया जा सकता है। जापान के कृषकों ने अधिक परिश्रम करके चप्पा-चप्पा भूमि को सीढ़ीनुमा खेत में बदल डाला और मिट्टी उपजाऊ बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के खादों का प्रयोग किया।

खनिज सम्पत्ति :— पर्वतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उनकी चट्टानों में बहुमूल्य खनिज सम्पत्ति का भण्डार मिलता है। प्राचीन पर्वतों में खनिज पदार्थ अधिक मिलते हैं। यूराल पर्वत पर खनिजों के भण्डार है। अपलेशियन पर्वतों पर कोयला, लोहा, मिट्टी तेल का भण्डार पाया जाता है। दक्षिण भारत के प्राचीन पठार पर मैंगनीज, लोहा, सोना, कोयला और अबरख आदि बहुतायत से मिलते हैं। वर्तमान सभ्यता का अवलम्बन खनिज

Scanned with CamScanner

पदार्थों पर ही टिका हुआ है। पर्वतों से दूर औद्योगिक केन्द्र होने के कारण जनसंख्या की कमी तथा जीवन-यापन की अन्य सुख-सुविधाओं की कमी पाई जाती है।

औद्योगिक केन्द्र :— उद्योगों की स्थापना एवं इन्हें भली-भांति चलाने के लिए कच्चे माल, श्रमिकों की व्यवस्था, शक्ति के साधन, वाणिज्य-व्यापार, परिवहन के साधन आदि द्वारा प्रबंध पर्वतीय क्षेत्रों में करना कठिन कार्य है। इन सबमें परिवहन की सुविधा महत्वपूर्ण है। पेरू और एण्डीज पर्वतों में ~~खच्चर~~ अल्पाका तथा लामा नामक पशु को बोझ ढोने के लिए प्रयोग किया जाता है। भारत के हिमालय प्रदेश में माल ढोने के लिए याक, खच्चर तथा बकरियाँ काम में लाई जाती हैं। कुछ स्थानों पर पर्वतों को काटकर सड़कें बनाई गई हैं। रेलों को पहाड़ों को सुरंगें खोदकर निकाला जाता है।

विद्युत शक्ति उत्पादन :— पर्वतीय क्षेत्रों में विद्युत शक्ति उत्पादन की सुविधा अवश्य पायी जाती है। तेज बहने वाली ~~नदियों~~ नदियों तथा जल-प्रपातों को इसके लिए उपयोग किया जाता है। यह सस्ती विद्युत शक्ति लकड़ी चीरने, लुग्दी व कागज बनाने, वायु से नाइट्रोजन प्राप्त करने, सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र निर्माण करने के काम आती है। इस प्रकार की सुविधाएँ इटली, स्वीटजरलैण्ड, जापान, नार्वे, स्वीडन तथा उत्तरी भारत में अधिक पाई जाती हैं।